

रविवार 2 नवंबर, 2025

विषय — हमेशा की सजा

स्वर्ण पाठ: 1 यूहन्ना 1: 9

" यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। "

उत्तरदायी अध्ययन: यशायाह 55: 6, 7, 13

भजन संहिता 103: 8, 9

यिर्मयाह 31: 3

- ⁶ जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो।
- ⁷ दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।
- ¹³ तब भटकटैयों की सन्ती सनौवर उगेंगे; और बिच्छु पेड़ों की सन्ती मेंहदी उगेगी; और इस से यहोवा का नाम होगा, जो सदा का चिन्ह होगा और कभी न मिटेगा।
- ⁸ यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी, विलम्ब से कोप करने वाला और अति करुणामय है।
- ⁹ वह सर्वदा वादविवाद करता न रहेगा, न उसका क्रोध सदा के लिये भड़का रहेगा।
- ³ यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. मत्ती 4: 23

- ²³ और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

2. मत्ती 5: 1, 2

- 1 वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए।
- 2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,

3. मत्ती 6: 9-13

- 9 सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो; "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।
- 10 तेरा राज्य आए; तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।
- 11 हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।
- 12 और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर।
- 13 और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं।
आमीन।

4. 2 शमूएल 11: 2-6, 14, 15, 26, 27

- 2 सांझ के समय दाऊद पलंग पर से उठ कर राजभवन की छत पर टहल रहा था, और छत पर से उसको एक स्त्री, जो अति सुन्दर थी, नहाती हुई देख पड़ी।
- 3 जब दाऊद ने भेज कर उस स्त्री को पुछवाया, तब किसी ने कहा, क्या यह एलीआम की बेटी, और हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी बतशेबा नहीं है?
- 4 तब दाऊद ने दूत भेज कर उसे बुलवा लिया; और वह दाऊद के पास आई, और वह उसके साथ सोया। वह तो ऋतु से शुद्ध हो गई थी तब वह अपने घर लौट गई।
- 5 और वह स्त्री गर्भवती हुई, तब दाऊद के पास कहला भेजा, कि मुझे गर्भ है।
- 6 तब दाऊद ने योआब के पास कहला भेजा, कि हित्ती ऊरिय्याह को मेरे पास भेज, तब योआब ने ऊरिय्याह को दाऊद के पास भेज दिया।
- 14 बिहान को दाऊद ने योआब के नाम पर एक चिट्ठी लिखकर ऊरिय्याह के हाथ से भेजदी।
- 15 उस चिट्ठी में यह लिखा था, कि सब से घोर युद्ध के साम्हने ऊरिय्याह को रखना, तब उसे छोडकर लौट आओ, कि वह घायल हो कर मर जाए।
- 26 जब ऊरिय्याह की स्त्री ने सुना कि मेरा पति मर गया, तब वह अपने पति के लिये रोने पीटने लगी।
- 27 और जब उसके विलाप के दिन बीत चुके, तब दाऊद ने उसे बुलवाकर अपने घर में रख लिया, और वह उसकी पत्नी हो गई, और उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। परन्तु उस काम से जो दाऊद ने किया था यहोवा क्रोधित हुआ।

5. 2 शमूएल 12: 1-7, 13, 15 (बच्चा) (से), 15 (था), 19 (जब डेविड) (से :), 22, 24

- 1 तब यहोवा ने दाऊद के पास नातान को भेजा, और वह उसके पास जा कर कहने लगा, एक नगर में दो मनुष्य रहते थे, जिन में से एक धनी और एक निर्धन था।
- 2 धनी के पास तो बहुत सी भेड़-बकरियां और गाय बैल थे.

- ³ परन्तु निर्धन के पास भेड़ की एक छोटी बच्ची को छोड़ और कुछ भी न था, और उसको उसने मोल ले कर जिलाया था। और वह उसके यहां उसके बालबच्चों के साथ ही बड़ी थी; वह उसके टुकड़े में से खाती, और उसके कटोरे में से पीती, और उसकी गोद में सोती थी, और वह उसकी बेटी के समान थी।
- ⁴ और धनी के पास एक बटोही आया, और उसने उस बटोही के लिये, जो उसके पास आया था, भोजन बनवाने को अपनी भेड़-बकरियों वा गाय बैलों में से कुछ न लिया, परन्तु उस निर्धन मनुष्य की भेड़ की बच्ची ले कर उस जन के लिये, जो उसके पास आया था, भोजन बनवाया।
- ⁵ तब दाऊद का कोप उस मनुष्य पर बहुत भड़का; और उसने नातान से कहा, यहोवा के जीवन की शपथ, जिस मनुष्य ने ऐसा काम किया वह प्राण दण्ड के योग्य है।
- ⁶ और उसको वह भेड़ की बच्ची का औगुणा भर देना होगा, क्योंकि उसने ऐसा काम किया, और कुछ दया नहीं की।
- ⁷ तब नातान ने दाऊद से कहा, तू ही वह मनुष्य है। इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि मैं ने तेरा अभिशेक कराके तुझे इस्राएल का राजा ठहराया, और मैं ने तुझे शाऊल के हाथ से बचाया;
- ¹³ तब दाऊद ने नातान से कहा, मैं ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। नातान ने दाऊद से कहा, यहोवा ने तेरे पाप को दूर किया है; तू न मरेगा।
- ¹⁵ ... बच्चा ऊरिय्याह की पत्नी से दाऊद के द्वारा उत्पन्न था... बहुत रोगी हो गया।
- ¹⁹ ...अपने कर्मचारियों को आपस में फुसफुसाते देखकर दाऊद ने जान लिया कि बच्चा मर गया
- ²² उसने उत्तर दिया, कि जब तक बच्चा जीवित रहा तब तक तो मैं यह सोचकर उपवास करता और रोता रहा, कि क्या जाने यहोवा मुझ पर ऐसा अनुग्रह करे कि बच्चा जीवित रहे।
- ²⁴ तब दाऊद ने अपनी पत्नी बतशेबा को शान्ति दी, और वह उसके पास गया; और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उसने उसका नाम सुलैमान रखा। और वह यहोवा का प्रिय हुआ।

6. भजन संहिता 51: 1-12

- ¹ हेपरमेश्वर, अपनी करूणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर; अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे।
- ² मुझे भर्त्सी भांति धोकर मेरा अधर्म दूर कर, और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर!
- ³ मैं तो अपने अपराधों को जानता हूं, और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है।
- ⁴ मैं ने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया, और जो तेरी दृष्टि में बुरा है, वही किया है, ताकि तू बोलने में धर्मी और न्याय करने में निष्कलंक ठहरे।
- ⁵ देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा।
- ⁶ देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है; और मेरे मन ही में ज्ञान सिखाएगा।
- ⁷ जूफा से मुझे शुद्ध कर, तो मैं पवित्र हो जाऊंगा; मुझे धो, और मैं हिम से भी अधिक श्वेत बनूंगा।
- ⁸ मुझे हर्ष और आनन्द की बातें सुना, जिस से जो हड्डियां तू ने तोड़ डाली हैं वह मगन हो जाएं।
- ⁹ अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर ले, और मेरे सारे अधर्म के कामों को मिटा डाल।
- ¹⁰ हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर।
- ¹¹ मुझे अपने साम्हने से निकाल न दे, और अपने पवित्र आत्मा को मुझ से अलग न कर।

¹² अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे, और उदार आत्मा देकर मुझे सम्भाल॥

7. इब्रानियों 8: 12

¹² क्योंकि मैं उन के अधर्म के विषय में दयावन्त हूंगा, और उन के पापों को फिर स्मरण न करूंगा।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 35: 30 (से.)

प्रेम की योजना पापी को सुधारना है।

2. 497: 9 (हम)-12

हम पाप को नष्ट करने में ईश्वर की क्षमा और आध्यात्मिक समझ को स्वीकार करते हैं जो बुराई को असत्य करार देती है। लेकिन पाप में विश्वास को तब तक दंडित किया जाता है जब तक कि विश्वास बना रहता है।

3. 405: 22-24

दोषी विवेक के संचयी प्रभावों को सहन करने की तुलना में पृथ्वी पर हर संक्रमण के संपर्क में आना बेहतर था।

4. 404: 12-16

यदि पश्चाताप नश्वर मन में बुराई खत्म हो गई है, जबकि इसका प्रभाव अभी भी व्यक्ति पर बना हुआ है, तो आप इस विकार को दूर कर सकते हैं क्योंकि भगवान का कानून पूरा हो गया है और अपराध को रद्द कर देता है। स्वस्थ पापी कठोर पापी होता है।

5. 19: 17-28

पश्चाताप और पीड़ा के हर दर्द, सुधार के लिए हर प्रयास, हर अच्छा विचार और काम, हमें पाप के लिए यीशु के प्रायश्चित को समझने और उसकी प्रभावकारिता की सहायता करने में मदद करेगा; लेकिन अगर पापी प्रार्थना और पश्चाताप करना, पाप करना और क्षमा करना जारी रखता है, तो उसके पास प्रायश्चित में बहुत कम हिस्सा है, — परमेश्वर के साथ एकता में, - क्योंकि उसके पास व्यावहारिक पश्चाताप का अभाव है, जो हृदय को सुधारता है और मनुष्य को ज्ञान की इच्छा करने में सक्षम बनाता है। जो लोग प्रदर्शन नहीं कर सकते, कम से कम भाग में, हमारे गुरु की शिक्षाओं और अभ्यास के दिव्य सिद्धांत का भगवान में कोई हिस्सा नहीं है। यदि उसके प्रति अवज्ञा में रहते हैं, तो हमें कोई सुरक्षा महसूस नहीं करनी चाहिए, हालांकि भगवान अच्छा है।

6. 242: 1-20

पश्चाताप, आध्यात्मिक बपतिस्मा, और उत्थान के माध्यम से, नश्वर अपने भौतिक विश्वासों और झूठी व्यक्तित्व को बंद कर देते हैं। यह केवल समय का सवाल है "कि छोटे से ले कर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे।" पदार्थ के दावों से इंकार आत्मा की खुशियों की ओर, मानव स्वतंत्रता और शरीर पर अंतिम विजय की ओर एक बड़ा कदम है।

स्वर्ग के लिए एक रास्ता है, सद्भाव; और ईश्वरीय विज्ञान में मसीह हमें इस मार्ग को दिखाता है। कोई और वास्तविकता नहीं है, अच्छे ईश्वर और उसके प्रतिबिंब को जानने और इंद्रियों के दर्द और सुख से श्रेष्ठ होने के अलावा जीवन की कोई अन्य चेतना नहीं है।

स्व-प्रेम एक ठोस शरीर की तुलना में अधिक अपारदर्शी है। एक रोगी ईश्वर की आज्ञाकारिता में, प्रेम के सार्वभौमिक विलायक के साथ भंग करने के लिए हमें श्रम करना चाहिए, - आत्म-इच्छा, आत्म-औचित्य, और आत्म-प्रेम, - जो आध्यात्मिकता के खिलाफ युद्ध करता है और पाप का कानून मौत।

7. 405: 5-21

क्रिश्चियन साइंस मनुष्य को भविष्यवाणियों में महारत हासिल करने के लिए आज्ञा देता है, - दया के साथ घृणा करने के लिए, शुद्धता के साथ वासना को जीतने के लिए, दान के साथ बदला लेने के लिए, और ईमानदारी के साथ धोखे को दूर करने के लिए। यदि आप स्वास्थ्य, खुशी और सफलता के खिलाफ षड्यंत्रकारियों की एक सेना को संजोना नहीं चाहते हैं, तो इन त्रुटियों को उनके शुरुआती चरणों में नष्ट कर दें। वे आपको न्यायाधीश के पास पहुंचाएंगे, जो त्रुटि के खिलाफ सच्चाई का मध्यस्थ होगा। न्यायाधीश आपको न्याय दिलाएगा, और नश्वर मन और शरीर पर नैतिक कानून की सजा दी जाएगी। जब तक आपको अंतिम भुगतान नहीं किया जाता है, तब तक दोनों को पदच्युत किया जाएगा - जब तक कि आपने भगवान के साथ अपना खाता संतुलित नहीं किया है। "मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।" अच्छा इंसान आखिरकार अपने पाप के डर को दूर कर सकता है। स्वयं को नष्ट करना पाप की आवश्यकता है। अमर मनुष्य ईश्वर की सरकार को प्रदर्शित करता है, जिसमें पाप करने की शक्ति नहीं है।

8. 316: 3-11

विज्ञान को उसके निर्माता से जोड़ा जा रहा असली आदमी, नश्वर को केवल पाप से मोड़ने की जरूरत है और मसीह, वास्तविक व्यक्ति और भगवान के साथ उसके संबंध को खोजने के लिए और दिव्य पुत्रत्व को पहचानने के लिए नश्वर स्वार्थ की दृष्टि खोना चाहिए। मसीह, सत्य, को शरीर पर आत्मा की शक्ति को साबित करने के लिए यीशु के माध्यम से प्रदर्शित किया गया था, - यह दिखाने के लिए कि सत्य मानव मन और शरीर पर अपने प्रभाव, बीमारी को ठीक करने और पाप को नष्ट करने से प्रकट होता है।

9. 522: 29-1

क्या जीवन, सत्य और प्रेम मृत्यु, त्रुटि और घृणा उत्पन्न करते हैं? क्या सृष्टिकर्ता अपनी ही रचना की निंदा करता है? क्या ईश्वरीय नियम का अचूक सिद्धांत बदलता है या पश्चाताप करता है? ऐसा नहीं हो सकता।

10. 5: 3-11

गलत काम के लिए दुःख है, लेकिन सुधार की दिशा में एक कदम और बहुत आसान कदम है। ज्ञान द्वारा आवश्यक अगला और महान कदम हमारी ईमानदारी की परीक्षा है, - अर्थात्, सुधार। इसके लिए हमें परिस्थितियों के तनाव में रखा गया है। प्रलोभन बोली हमें अपराध को दोहराती है, और जो किया जाता है उसके बदले में आ जाता है। इसी तरह यह हमेशा रहेगा, जब तक हम यह नहीं सीख लेते कि न्याय के कानून में कोई छूट नहीं है और हमें "पूरी तरह से" भुगतान करना होगा। जिस नाप से तुम नापते हो, "उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा"

11. 6: 3 (ईश्वरीय)-5, 11-22

ईश्वरीय प्रेम मनुष्य को सुधारता है और नियंत्रित करता है। पुरुष क्षमा मांग सकते हैं, लेकिन यह ईश्वरीय सिद्धांत केवल पापी को सुधारता है।

पाप के परिणाम के रूप में पीड़ित होने के लिए, पाप को नष्ट करने का साधन है। जब तक भौतिक जीवन में पाप और पाप नष्ट नहीं हो जाते, तब तक पाप का हर आनंद उसके दर्द के बराबर होगा। स्वर्ग तक पहुँचने के लिए, हम होने के दिव्य सिद्धांत को समझना चाहिए।

"भगवान प्यार है।" इससे अधिक हम पूछ नहीं सकते, उच्च हम नहीं देख सकते हैं, आगे हम नहीं जा सकते। यह मानने के लिए कि ईश्वर क्षमा करता है या पाप को दंडित करता है जैसा कि उसकी दया की मांग की गई है या बिना शर्त के, प्यार को गलत समझना और प्रार्थना को अपराध के लिए सुरक्षा-वाल्फ बनाना है।

12. 357: 1-5

सामान्य न्याय में, हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि परमेश्वर ने मनुष्य को वह करने के लिए दंडित नहीं किया जो उसने मनुष्य को करने में सक्षम बनाया, और वह जानता था कि मनुष्य क्या करेगा। भगवान है "किसका आंखें ऐसी शुद्ध हैं स्पष्ट नहीं देख सकते।"

13. 16: 27, 29, 31

हमारे पिता-माता भगवान, सभी सामंजस्यपूर्ण,

मनमोहक

तेरा राज्य आ गया; तू हमेशा मौजूद है।

14. 17: 2-3, 5, 7, 10-11, 14-15

जैसा कि स्वर्ग में पृथ्वी पर भी है, हमें यह जानने में सक्षम करें, कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, सर्वोच्च है।

दैनिक कर्तव्यों

मेरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6